मौसम परिवर्तन आखिर क्यों?

अशोक मानव

मौसम परिवर्तन प्रकृति की वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप जीव का निर्माण होता है। मौसम जीव उत्पत्ति का कारण है। इस विषय पर कई स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं, जैसे मौसम परिवर्तन क्यों होता है? इस परिवर्तन में सबसे बड़ा योगदान किसका है? क्या इसे पहचान कर अच्छे जीव का विकास किया जा सकता है? क्या मौसम परिवर्तन आवश्यकतानुसार किया जा सकता है? मौसम परिवर्तन से क्या मानव जीवन आनन्दित किया जा सकता है? यदि हाँ तो क्यों नही किया जा रहा है? पूरी सृष्टि का निर्माण दो के मिलने से होता है। चूँकि दो के मिलन से तीसरे का निर्माण होता है इसलिए तीसरे में दोनों का बराबर अंश आ जाता हैं मिलन की क्रिया में जिस तत्व की प्रवृत्ति ज्यादा शान्त सक्रिय होती है जो पहले छेड़ने का कार्य करता है, उसी प्रकृति के जीव का निर्माण होता हैं वह जीवन प्रकृति के सहयोग से अपनी प्रवृत्ति का विकास करता है वह सजीव स्वयं अपने सहयोगी जीव को छोड़कर क्रिया करता हैं इसी प्रक्रिया से सृष्टि होती है इस सृष्टि में सभी तत्व का सहयोग है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण मानव समाज हैं जो इस कारण को जानकर उपयोगी तत्व को संरक्षण देकर अपना जीवन आनन्दित करता है जो अपने विवेक के अनुसार सत्य-असत्य की सीढ़ी अलग कर एक व्यवस्था बनाता है जिससे प्रकृति के अन्य जीवन को सुरक्षा मिलती हैं यद्यपि मानव समाज अपने उपयोग के लिए अन्य जीव का प्रयोग करता है। पर इससे अलग हटकर अन्य जीव का योगदान प्रकृति के निर्माण में है तत्व के प्रयोग में भी उपयोगिता के अनुसार महत्व दिया जाता है इस महत्व का निर्धारण मानव समाज करता है। जीवन प्राणी तत्व का निर्माण प्रकृति की क्रिया का परिणाम होता हैं इसलिए प्रकृति सभी को समाज महत्व देती हैं और अपना सहयोग सभी के साथ बराबर करती है। सभी प्रकृति के सहयोग से अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपने गुण का विकास करते हैं। जीव जब बीज रूप में होता है तो उसे सुख-दुःख का एहसास नहीं होता है जब क्रिया करके बीज को प्रकृति में स्थापित किया जाता है और प्रकृति का सहयोग उस बीज को मिलने लगता है तो उस बीज को अपने होने का एहसास होने लगता है जिससे उसे सुख-दुःख की अनुभूति होने लगती है।

प्रकृति में सर्वप्रथम दो तत्व ऐसे प्रकाश में आए, एक तेज दूसरा शान्त। तेज सूर्यदेव का गुण है और शान्त जल देवी का गुण हैं यही दो ऐसे हैं जिसका अन्त कभी नहीं हो सकता। जो स्वयं जलता है उसे कोई जला नहीं सकता है और जो स्वयं दूसरे को डुबोता है, उसे कोई डुबो नहीं सकता है। जो देता है उसे देवता कहते हैं और जो दी हुई वस्तु को धारण करता है उसे देवी कहते हैं। इस नामकरण की यह प्राकृतिक परिभाषा है। किसी का भी नामकरण प्रकृति के गुण के अनुसार किया जाता है इसलिए मैं इसकी व्याख्या कर रहा हूँ। मेरा उद्देश्य प्रकृति की सत्यता को जानना है, जो व्यक्ति इस व्याख्या से सहमत नहीं हो पाते हैं और उसकी भावना को दुःख पहुँचता है, वे स्वयं सत्य को प्रकर्षत का खोजें यदि कोई नई बात मिलती है तो अपने उस विचार से मुझे अवगत करायें। सूर्यदेव का तेज जब जल देवी को छेड़ता है तब जल देवी सक्रिय हो जाती है चूँकि प्रकृति का हर तत्व इन्हीं दोनों का अंश है इसलिए इनके सहयोग से तेज और शान्त का मिलन एक निश्चित बिन्दु पर होता है इस मिलन की क्रिया में दोनों का बराबर का सहयोग होता है, जिससे इसे सम्भोग कहा जाता हैं सम्भोग बराबर का होता है। इसलिए इस क्रिया में दोनों का समान योगदान होता है। किसी का योगदान कम या ज्यादा नहीं होती है। यही व्याख्या प्रकृति के अन्य जीव-प्राणी के लिए भी लागू होती है क्योंकि तेज और शान्त के इस क्रिया के परिणामस्वरूप ही जीव प्राणी की उत्पत्ति होती हैं ऐसा देखते हुए मानव समाज को पुरूश वर्ग को अधिक और स्त्री वर्ग को कम महत्व देने वाली विचारधारा को बदल देना चाहिए। इस सृष्टि के निर्माण में दोनों का एक समाज महत्व हैं यदि उत्तरदायित्व के रूप में देखा जाये तो सृष्टि निर्माण में स्त्री वर्ग का अधिक सहयोग है क्योंकि सम्भोग क्रिया के बाद बीज स्त्री वर्ग धारण करती है इस बीज से जीव निर्माण कर प्रकृति में विचरण करने योग्य बनाने का कार्य स्त्रियाँ ही करती हैं। इस प्रकार स्त्रियाँ सृष्टि निर्माण में अधिक योगदान करती है। तेज और शान्त के मिलने से सिर्फ मानव समाज का निर्माण नहीं होता है बल्कि पूरी सृष्टि का निर्माण इसी से होता है। प्रकृति के अन्य जीव प्राणी भी सम्भोग क्रिया करते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनके वर्ग का विकास होता